ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.1, JAN-JUNE,2023 /10

अयोध्या का राजनैतिक इतिहास

*आनन्द कुमार दूबे एवं ** प्रो0 एन0के0 तिवारी
*शोध छात्र एवं **शोध पर्यवेक्षक
इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या

सारांश–

आदि मानव मनु ने कोसल देश की राजधानी अयोध्या को निर्मित किया। इस प्रकार मनु अयोध्या के सर्वप्रथम शासक थे। मनु की कई सन्ताने हुई, इनमें एक पुत्र इक्ष्वाकु एवं पुत्री इला थी। इक्ष्वाकु से सर्यवंश की उत्पत्ति हुई जिसने सम्पूर्ण उत्तर भारत पर अपना अधिकार जमाया। सूर्यवंश में इक्ष्वाकु के बाद 63वीं पीढ़ी में महाराजा दशरथ हुए। मनु के द्वारा पालित –पोषित प्रजा के कारण इस देश का नाम भारत पड़ा। जिसकी पुष्टि सुप्रसिद्व इतिहास मर्मज्ञ श्री विन्हामणि वैध जी ने किया है।

मुख्य शब्द–

वैवस्वत मनु, पुराण, इक्ष्वाकु, भारतवर्ष, भरत, सूर्यवंश, वृहदंल शासन–व्यवस्थाा, राजपद, अनुवांशिक, जीर्णोद्वार, सीमाका, जनश्रुति, अयोध्या, कोशल, साकेत, सांस्कृतिक क्रिया कलाप, शाक्य, कुलक, नव आयाम। अयोध्या नगरी की स्थापना वैवस्वत मनु ने प्रलय की घटना के पश्चात की थी ऐसा वर्णन पुराणों में अभिलिखित है। महाकवि कालिदास जी ने रघुवंश के प्रथम सर्ग में लिखा है–

[1]वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम्। आसीन्महीभृतामाद्यः प्रणवरच्छन्द सामिव।।

आदि मानव मनु ने कोसल देश की राजधानी अयोध्या को निर्मित किया। इस प्रकार मनु अयोध्या के सर्वप्रथम शासक थे पुराणों में भी यह वर्णित मिलता है। मनु की कई सन्तानें हुई इनमें एक पुत्र इक्ष्वाकु एवं पुत्री इला थी। इक्ष्वाकु से सूर्यवंश की उत्पत्ति हुई जिसने सम्पूर्ण उत्तर भारत पर अपना अधिकार जमाया। इक्ष्वाकु का प्रथम पुत्र अयोध्या में रहा, दूसरा–कपिलवस्तु में, तीसरा विशाला, चौथा मिथिलाधिपति बना। चन्द्र के पुत्र बुध के संयोग से इला के पुरूरवस नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

सूर्य वंश में इक्ष्वाकु के बाद 63वीं पीढ़ी में महाराज दशरथ हुए। राजा दशरथ के चार पुत्र थे। इन्ही मनु के द्वारा पालित–पोषित प्रजा के कारण इस देश का नाम भारत पड़ा। इसकी पुष्टि सुप्रसिद्ध इतिहास मर्मज्ञ भी विन्हामणि वैद्य के एक ग्रन्थ ''हिन्दू भारत का उत्कर्ष''' की अधोलिखित पंक्तियों से भी होती है–

''पुराण परम्परा बता रही है कि हिन्दुस्तान का भारतवर्ष नाम जिस भरत के कारण पड़ा वह दुष्यन्त पुत्र भरत नहीं किन्तु हजारों वर्ष पूर्व उत्पन्न मनु का प्रपौत्र साक्षात् मनु ही था''[2]

अयोध्या के इतिहास के सुप्रसिद्ध लेखक लाला सीताराम जी के द्वारा लिखित ग्रन्थ ''अयोध्या का इतिहास'' के अनुसार अयोध्या के सूर्यवंशी राजाओं की कुल संख्या 94 थी जिनको निम्नानुसार सूचीबद्ध भी किया जा सकता है– मनु, इक्ष्वाकु, शशाद, ककुत्स्थः, अनेनस पृथु, विश्वगारव आर्द्र, युवनाश्व, श्रावस्त, बृहदश्व,कुवलयाश्व दृढ़ाश्व प्रमोद, हर्षश्रव, निकुम्भ संहताश्व, कृशाश्व, प्रसेनजित मान्धातृ पुरुकुत्स त्रसदस्यु, सम्भूत, अनरण्य, पृषदश्व, हर्यश्रव, वसुमनस, तृधन्वन् त्रैयारुण, त्रिशंकु, हरिश्चन्द्र, रोहित, हरित, चंचु, विजय, रुरुक, वृक बाहु, सागर, असमन्जस, अंशुमत, दिलीप भगीरथ, श्रृत, नाभाग, अम्बरीष, सिंधुदीप अयतायुस, ऋतुपर्ण, सर्वकाम, सुदास, कल्माषपाद, अश्मक, मूलक, शतरथ वृद्धशर्मन, विश्वसह, दीर्घबाहु, रघु, अज,दशरथ, रामचन्द्र, कुश, अतिथि, नल, नभस, पुण्डरीक, क्षेमधन्वन् देवानीक, अहीनगु, पारिपात्र, दल, उक्थ, वज्जनाभ, शंखन व्युषिताश्व, विश्वसह, हिरण्यनाभ,

पुष्प, ध्रुवसन्धि, सुदर्शन अग्निवर्ण, शीघ्र, मरु, प्रयुश्रुत, सुसन्धि अमर्ष, महाश्वत अमर्ष, महाश्वत विश्रुतवत्, वृहदल।[3]

महाभारत के पहले अयोध्या का अन्तिम राजा वृहदल था। जिसे महाभारत संग्राम में अर्जुन पुत्र अभिमन्यु ने मारा था। महाभारत के बाद (31) इक्कतीस राजा हुए। जिनके नाम है बहत्क्ष्य, ऊरूक्षय, वत्सद्रोह प्रतिव्योम, दिवाकर, सहदेव, ध्रुवाश्व, भानुरथ, प्रतीताश्व, सुप्रतीप मरूदेव,सुनक्षत्र, किन्नराश्रव, अन्तरिक्ष, सुषेण, सुमित्र, बृहद्रज, धर्म, कृतज्जय, व्रात रणज्जय, संजय, शाक्य, शुद्धोधन, सिद्धार्थ, प्रसेनजित, क्षुद्रक, कुलक सुरथ तथा सुमित्र नामक राजा थे।[4] यह राजा महानन्द की राज्यक्रान्ति में मारा गया था।इन राजाओं के राजनीतिक तथा सांस्कृतिक क्रियाकलाप भारतीय इतिहास में नव आयाम सा जोड़ देते हैं। उनकी शासन– व्यवस्था निराली तथा प्रजाहितकारी थी। यद्यपि राजपद आनुवांशिक होता था तथापि परिस्थिति के अनुसार राजा का चुनाव भी कर लिया जाता था। अयोध्या के राजाओं का उपर्युक्त सूचीक्रम प्राचीन ग्रन्थों, पुराणों, बाल्मीकि रामायण के आधार पर सम्भवतः तय किया गया है। जबकि जैन धर्म के अनुसारअयोध्या के प्रथम राजा ऋषभदेव जी का मानते है जिनको ''आदि नाथ'' भी कहा जाता है।[5] यही प्रथम तीर्थंकर भी थे। आदिनाथ के बाद (23) तेइस अन्य तीर्थंकर हुए।

प्रसिद्ध विद्वान चम्पतराय जैन के 24 तीर्थंकरों में 5 की जन्मभूमि अनुसार अयोध्या ही थी जिनके नाम के मन्दिर भी अयोध्या में विद्यमान है।

ईसवी सन् की तीसरी एवं चौथी शताब्दी में अयोध्या उजड़ गयी थी। इसका पता लगाना भी बहुत कठिन कार्य था। आगे चलकर महान सम्राट विक्रमादित्य ने अयोध्या नगरी का जीर्णोद्वार कराना चाहा तो इस नगर का सीमांकन भी दुरुह हो गया था। यह विक्रमादित्य गुप्तवंश का चन्द्रगुप्त द्वितीय ''विक्रमादित्य'' हो सकता है। डॉ० विन्सेण्ट स्मिथ कहते है कि भारत की जनश्रुतियों और कहानियों में जिस विक्रमादित्य का नाम बहुत आया है वह यही हो सकता है दूसरा नहीं। अवध गजेटियर में विक्रमादित्य के राज काल की एक और जनश्रुति लिखी मिलती है। उसके अनुसार राजा विक्रमादित्य ने अयोध्या में 80 (अस्सी) वर्ष राज्य किया। यह मान लिया कि राजधानी अयोध्या में 400 ई० में स्थापित हुई तो 80 वर्ष ई0 480 में बीत गये होंगें।[6]

कुछ हूणों के आक्रमण से कुछ कुमारगुप्त के उत्तराधिकारियों की निर्बलता से गुप्त शासक पुनः अपनी पुरानी राजधानी को लौट गया और अयोध्या पर जोगियों का अर्थात् ब्राह्मण, साधु संतो का अधिकार हो गया। विक्रमादित्य के बाद अयोध्या बार–बार राजनीतिक एवं धार्मिक संघर्षो का शिकार हुई। मुसलमान तथा अंग्रेजों के शासन काल में यहाँ कई अधीनस्थ राजाओं की सत्ता रही। इसी कारण अयोध्या का स्वतंत्र विकास अवरूद्ध रहा।

प्राचीन काल तथा यवन काल में अयोध्या– अवध गजेटियर में वर्णित एक जनश्रुति के अनुसार विक्रमादित्य को जादू के बल से समुद्रपाल जोगी ने उड़ा दिया और स्वयं राजा बन गया।[7] जोगियों राजा 17 पीढ़ी तक रहा और उन्होंने 643 वर्ष तक राज्य किया। इसके पश्चात हर्षवर्धन के राज्य मे जो ई० तक 606 से 647 ई0 तक रहा अयोध्या कन्नौज (कान्यकुब्ज) राज्य के अधीन रहा। 647ई0 में हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद उसका राज्य छिन्न–भिन्न हो गया और घाघरा पार के श्रीवास्तवों ने राजधानी और आस–पास के प्रान्तों पर अपना अधिकार कर लिया। इस प्रकार से गुप्तों के चले जाने पर अयोध्या का शासन सुदूर की राजधानी से किया जाता था।

यह क्रम ग्यारहवीं शताब्दी तक चलता रहा। आठवीं शताब्दी में अयोध्या कन्नौज के परिहारों (प्रतिहार) के शासन में चली गयी। कन्नौज के परास्त होने पर शहाबुद्दीन गोरी ने ई० 1194 में अवध पर आक्रमण किया और मखदूमशाहजूरन गोरी अयोध्या में मारा गया और वहीं पर उसकी समाधि बनी। परन्तु बख्तियार खिलजी ने सर्वप्रथम अवध में राज्य – प्रबन्ध की व्यवस्था किया और उसे अपनी सेना का एक केन्द्र बनाया। 1236 ई0 और 1242ई0 में क्रमशः नसीरूद्दीन नवाशी और कमुउद्दीन केरान

अयोध्या का हाकिम रहा। 1255 ई0 में बादशाह की मातामलका जहाँ ने कजलग खाँ के साथ विवाह कर लिया और अपने बेटे से लड़ पड़ी। इस पर बादशाह ने उसे अयोध्या भेज दिया। वहाँ कजलग खाँ ने विद्रोह किया और बादशाह के वजीर ने उसे निकाल दिया और अर्सला खाँ मंजर को हाकिम बनाया। परन्तु ई0 1259 में वह भी निकाल दिया गया।

खिलजी के बाद तुगलक वंश दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। तुगलकों के समय में अयोध्या कीं स्थिति ठीक रही। तारीख–ए–फिरोजशाही में लिखा है कि मुहम्मद बिन तुगलक ने गंगा के तट पर एक नगर बसाना चाहा था जिसका नाम उसने स्वर्गद्वारी रखा।[8] फीरोज तुगलक ने पहली बार 1324 ई0 और दूसरी बार 1348 ई० में अयोध्या आया था। उसके समय मे मलिक और बागी गुलमुल्क अयोध्या के शासक रहे थे। अकबरपुर (अम्बेडकरनगर) में एक छोटे से मकबरे मे एक शिलालेख था जिससे प्रकट होता है कि उस समय मुस्लिम राज्य स्थिर हो गया था। इसके साथ धर्मार्थ जागीरें लगायी जाती थी।[9]

पुनः 1731 ई0 मे सफदर–जंग के समय से अयोध्या के दिन फिरे। उसका प्रधानमंत्री और सेनानायक इटावा का रहने वाला सक्सेना कायस्थ नवलराय था। नवलराय ने रूहेलों को अवध से मार भगाया और अन्त में फर्रुखाबाद के नवाब बंगश की लड़ाई में धोखे से मार डाला गया। पण्डित माधव प्रसाद ने अपने समाचार पत्र सुदर्शन में लिखा है कि–

''मुसलमान राज्य में अयोध्या मुसलमान मुर्दों के लिए करबला हुई।''[10] सफदरजंग के पीछे उसका बेटा सुजाउद्दौला बादशाह हुआ। उसने वर्तमान अयोध्या से 4 मील पश्चिम फैजाबाद नगर बसाया और उसी नेघाघरा (सरयू) तट पर ऊँचा कोट बनवाया।

नवाबी एवं मुस्लिम काल में अयोध्या में मुस्लिम आक्रमणों का भी पूरा दबाब रहा। अनेक देवस्थान उजाड़ दिये गये। मूर्तियाँ खण्डित कर दी गयी। बहुत लम्बे समय धार्मिक विप्लव तथा तनाव चलता रहा। अनेक हिन्दू धर्म स्थान मुस्लिम आक्रान्ताओं ने अपने धर्म को बढ़ावा देने हेतु नष्ट किया। श्री राम जन्मभूमि उसका ज्वलन्त उदाहरण रह चुका है।

निष्कर्ष–

अयोध्या की राजनीतिक स्थिति समय–समय पर बदलती रही। महाराज मनु से लेकर भगवान राम तक सल्तनत शाल से लेकर अंग्रेजों के समय तक परिवर्तन होते रहे। 1731 ई0 में सफदरगंज के समय से अयोध्या के दिन फिरे। उसका प्रधानमंत्री नवलराय था। नवलराय ने रूहेलों केा अवध से मार भगाया। स्वतंत्रता के उपरान्त वर्तमान समय तक इस नगर का पूर्ण विकास नही हो सका, किन्तु राममन्दिर निर्माण स`अब यह नगर वैश्विक परिदृश्य पर एवं नया अध्याय लिखने को आतुर है।

सन्दर्भग्रन्थ – सूची

1. रघुवंश कालीदास, सर्ग–प्रथम
2. विन्हामणि वैद्य, हिन्दू भारत का उत्कर्ष
3. लाला सीताराम, अयोध्या का इतिहास, 1932, पृ0 57, 58,
4. लाला सीताराम, अयोध्या का इतिहास पृ0 37, 98,
5. स्कन्द पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर, पृ0 525
6. अवध गजेटियर, ई0 वी0 जोशी
7. ई0वी0 जोशी अवध गजेटियर यू0पी0 डिस्ट्रिक गजेटियर फैजाबाद 1960 पृ0 56,57,
8. तारीख–ए – फिरोजशाही
9. वही, 33
10. पण्डित माधव प्रसाद, सुदर्शन पत्रिका